B. A. Psychology Hons.
Part 2 Paper 3
Educational Psychology
Ranking Method (Merit)

(2)

कोटि विधि के गुण – (Ranking Method of Merits)

(i) Ranking Method शिक्षक सभी संभावित कोटियों rank को प्रयोग कर बालकों के व्यवहारों एवं शीलगुणों का अध्ययन करते हैं जैसे – यदि शिक्षक को 10 बालकों का Ranking करना है यानी उसे 1 से 10 कोटि तक का प्रयोग करनी है तो वह इनमें से प्रत्येक कोटि का प्रयोग कर बालकों के शीलगुणों का अध्ययन करेगा न कि इसमें से मात्र पहला चार कोटियाँ या अंतिम चार कोटियों का प्रयोग करेगा और बाकी को छोड़ देगा। इससे फायदा यह होता है कि कोटिविधि द्वारा प्राप्त आँकड़ों की Reliability तथा Validity बढ़ जाती है।

(ii) कोटि विधि में error of Central tendency, and error of Severity तथा error of leniency जैसे-भयानक त्रुटियाँ अपने-आप नियंत्रित रहती है क्योंकि शिक्षक को कुछ बालकों या बालकों को उच्च कोटि, कुछ को निम्न कोटि तथा कुछ को मध्य कोटि Middle rank की श्रेणी में रखना ही पड़ता है।

(iii) कोटि में एक फायदा यह बताया गया है कि इसमें शिक्षक या प्रेक्षक प्रत्येक बालक को एक-दूसरे से discriminate करते हुए Ranking करना होता है। इस विधि द्वारा शिक्षक को बालकों के बारे में relative difference का सही-सही ज्ञान हो पाता है और शिक्षक एक वैज्ञानिक एवं उत्तम निष्कर्ष पर पहुँचने में समर्थ हो पाते हैं।

कोटि विधि के दोष – (Ranking Method of Demerits)

(i) शिक्षा मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि Ranking Method द्वारा बालकों या शिक्षार्थियों के शील-गुणों की आपसी भिन्नता के अन्तर पता नहीं चलता। जैसे- यदि चार बालक द्वारा किसी बुद्धि परीक्षण पर प्राप्त Score जैसे – 70, 69, 50, 30 को Rank में बदला जाए तो क्रमशः

③

इनके Rank 1, 2, 3, तथा 4 होंगे। लेकिन यहाँ स्पष्ट है कि Rank 1 and 2 तथा 3 और 4 में अन्तर मात्र एक-एक का है परन्तु वास्तव में जिस बुद्धि Score को इन कोटियों द्वारा बताया जा रहा है उनमें आपस में काफी अधिक अन्तर है। 70 से 69 में मात्र एक प्राप्तांक का अन्तर है जबकि 50 से 30 Score में 20 का अन्तर है। कोटि विधि में स्पष्ट इन अन्तरों का कोई ध्यान नहीं रखा जाता।

(ii) Ranking Method का प्रयोग वहीं अधिक उपयुक्त होता है जब बालकों या छात्रों की संख्या कम हो। इनकी संख्या अधिक होने से कोटि विधि के प्रयोग में काफी अधिक कठिनाई बढ़ जाती है।

1. कुछ परिस्थितियों में विशेषकर शिक्षार्थियों या बालकों के व्यक्तिगत शीलगुणों के अध्ययन में काफी किया जाता है।

Ranking Method में शिक्षक या शिक्षा-मनोवैज्ञानिक बालकों को या शिक्षार्थियों को दिए गए शीलगुणों के आधार पर high rank से lower rank की दिशा में श्रेणीकरण करते हैं इस विधि द्वारा बालकों के आत्मनिष्ठ शीलगुणों का अध्ययन किया जाता है।